तृतीय अध्याय ॥

(८०) पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा ॥
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ५५

(८०) बहुत कल्याण की इच्छा करनेवाले जो पिता भाई पति देवर हैं ये सब वस्त्र और आभूषण से स्त्रियों की पूजा करें ॥ ५५ ॥

(८१) यत्र नार्य्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ॥
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्व्वास्तत्राफलाःक्रियाः५६

(८१) जिस कुल में स्त्रियों की पूजा होती है उस कुल में देवता रमण करते हैं और जहां स्त्रियों की पूजा नहीं होती वहां सब क्रियाएँ निष्फल होती हैं ॥ ५६ ॥

(८२) शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ॥
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्व्वदा ५७

(८२) जिस कुल में स्त्री शोक करती हैं वह कुल झटपट नष्ट हो

---

(८०) अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्न रक्खें ॥
(८१) अर्थात् स्त्रियों का अपमान कदापि न करना चाहिये ॥
(८२) इससे अधिक स्त्रियों को सुखी और प्रसन्न रखने का और क्या वचन होवेगा ॥

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/sivaprasada1926/0034
gefördert durch die DFG